

यंग इंडिया





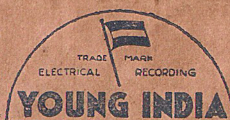
“मेरा लडका”

“प्रभात” हिन्दी चित्रपटके

सुश्राव्य व संग्राह्य रेकॉर्ड्स्.

THE NATIONAL GRAMOPHONE RECORD MFG. Co. LTD.

110, Medows Street, Fort, BOMBAY.



प्रभात फिल्म कं० (पुना)

"मेरा लडका"

एम. पी. प्रभात स्पेशल लेबल किं. रु. २-४-०

श्री प्रभात फ़िल्म कंपनी की नयी अयोजना :—

यद्यपि "दुनिया न माने" के चित्र से भारत वर्ष ही नहीं विदेशों में भी प्रभात फिल्म कं. का सूर्य दिनोंदिन पूर्ण प्रकाश कर रहा है—परन्तु **"मेरा लड़का"**-एक सामाजिक चित्र, अधिकांश में नये कलाकरों द्वारा बना कर-भारत के चित्रालयों में एक नया चमत्कार दिखाना यह प्रभात ही जैसी कंपनी का साहस है—सुन्दर बात तो यह है कि इस कंपनी के चित्र प्राय:सभी दृष्टिकोण से परिपूर्ण रहते हैं-संवाद--गायन--पार्श्विक संगीत--दृष्य--इत्यदि सभी अल्हादनोय होते हैं-चित्र की अद्वितीय सफलता का कारण है इस का संगीत तथा संवाद- गायनों में एक विचित्र आर्कषण भरा है वो ठीक समय तथा स्थान पर भाव तथा उद्देश भरे स्वरों तथा शद्बों में बड़ी कोमलता से गाये जाते हैं-इस सफलता का पहला श्रेय **श्रीयुत केशवरावजी भोले** को है-आप एक कुशल संगीतज्ञ है-शब्दोंका भाव समझ कर समय

ा ध्यान रखते हुये-उनको मीठे स्वरों में ताल इत्यादि से परिपूर्ण करके कलाकारों द्वारा उन्हें जनता के सन्मुख रखना ये आप ही की बुद्धि का चमत्कार है-ऐसी दशा में यदि ये कहा जाय कि **श्री. भोले** प्रभात की उज्वल ख्याति के एक मुख्य स्तम्भ हैं तो अनुचित न होगा।

श्री शान्ताराम आठवले को भी हम हृदय से बधाई देते हैं-मराठी संवाद के मधुर विधाता आप ही हैं- शब्दों में कूटकूट कर लालित्य भर देने में तो सफल हैं ही परन्तु अपने भावोंको बड़ी सरलता से कलाकारों के हृदय में जमादेने में भी आप सिद्ध हस्त हैं-''दुनिया न माने'' (मराठी) के मनमोहक गीतों में आपकी भावुकता का परिचय मिल चुका था-परन्तु इस बार **"मेरा लड़का"** (मराठी) में आपने एक नई शैली को प्रगट किया है।

श्रीयुत प. श्रीवास्तव "अनुज" की लेखिनी प्रायःही प्रभात चित्रों के हिन्दी संवादों द्वारा हमारे हृदय पर प्रभाव डाला करती है-वाकचित्रों के सफल संवादकार भारत वर्ष में उंगलियों पर गिने जासकतेहैं श्री अनुज उन्हीं चुने हुये व्यक्तियों में से एक हैं-आपके संवाद चित्रोंको एक विशेष आर्कषण दरसाने में सहायता देते हैं-'मेरा लड़का'' के भाव भरे कथानक का भार आप ही ने लिया है-और उसमें सफल भी है।

श्रीमती शान्ता हुबलीकर-एक नयी कलाकार हैं-मधुर कंठ-स्पष्ट उच्चारण-कोमलस्वरों की मधुर तान-प्रसन्न मुख तथा मन, सब ही आवश्यक बातों से परिपूर्ण ये चल चित्र की नयी मूर्ती एक विचित्रता प्रगट कर गई है-आपकी असाधारण सफलता देख कर भविष्य बहुत ही उज्वल दिखाई देता है-प्रभात की अध्यक्षता रूप किरणों में आपकी मनोहर रंगो पर प्रकाश पड़ने की पूर्ण आशा है-

बालनट चिरंजीव बालकराम भी इस चित्र की सफलता के एक

मुख अंग हैं–कितनी मधुरता–कितनी कोमलता–कितना स्पष्ठ भाषण सब ही
विशेषतामें ईश्वर दत्त हैं–भारतवर्ष के चित्रों की उन्नति इन्हीं बालनटों प
निर्भर है–प्रभात कंपनी ऐसे होनहार नटों को खोजकर जनता के सन्मुख
रखनें में सदैव सफल रही हैं—

यंत्रकार तंत्रकार–प्रायःवर्तमान तथा प्राचीन सब ही वादन यंत्रो को
कुशल वाद्यकारों द्वारा उपयोग में लाना भीं प्रभात की अटूट ख्याति क
एक मुख्य कारण है–ठीक समय पर इनसाजों से पाक्षिक संगीत तथा शब्दोंके
चित्र पर अंकित करने में प्रभात के वाद्यकार सिद्धहस्त हैं—

"दुनिया न माने" तथा "गोपाल कृष्ण" जैसे सफल चित्रों में श्री
परशुरामी का मधूर संगीत जनता को मुग्धकर चुका हैं–अब आप इस चित्र
में श्री छोटू के साथ एक भजन गाते हुये नवीनता के साथ अपनी कला
का प्रकशा कर रहे हैं—

चित्र की सफलता पर हम प्रभात परिवार को ह्रदय से बधांई देते हैं !

प्रभात फिल्म कं० (पुना)

'मेरा लडका'

Shanta Hublikar — शांता हुबलीकर

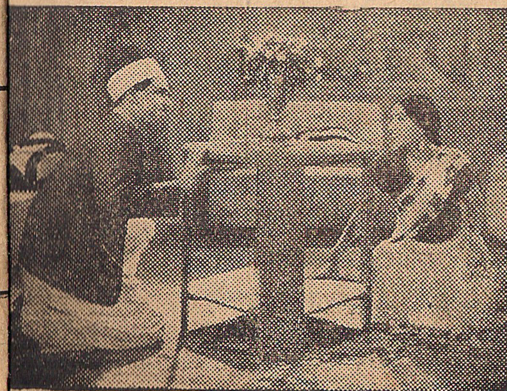
सरोजिनी :—

M.P. 567 / एम.पी. ५६७ { देखूं कबतक बाट / हे भँवरे तू ना सता

काव्य अनुवादक :—पंडित श्री. वास्तव

म्युजीक डाइरेक्टर :—श्री. केशवराव भोले

"देखूं कबतक बाट पियरवा"-ये एक भावभरा गीत है-श्रीमती शान्ता हुबलीकर जिन्होंने सरोजिनी का अभिनय किया है-इस सुन्दर गीत को कितने कोमल स्वरों में आपने गाया है इसका वर्णन हमारी लेखनी की सीमा के बहार है लेखक के सुन्दर शब्दोंको, जैसे "सागर उछले तुंग तरंगे" तथा "प्रीत की





भेंट हमारी – अब कब होगी ?
प्रीतकी ज्योती – मिल के जलेगी !
डूबे जब संसार – प्रलय में !
देखूँ तब तक बाट !–पियरवा !!

दुसरी तरफः—

सरोजिनी :—

हे भँवरे तू ना सता,
गुँजन से क्या कहता ?
क्यों मुझे बहकाता ?॥
फूलों का लोभी – भँवरा तू काला !
चपला कुँवारी – गोरी मैं बाला !
मैं हूँ नवेली ! हूँ निराली !
रूपखानी, नहीं सानी—
रानी मैं अलबेली !! ॥

—········—

Shanta Hublikar शांता हुबलीकर

सरोजिनी :—

M.P. 568 / एम.पी. ५६८ } कैसा जादु डाला / सुरज आय चढे

"कैसा जादू डाला तूने" ये एक मिली हुई भाषाका–बिरही के टूटे

ज्योति मिलके जलेगी"–"डूबे जब संसार-प्रलय में" "अदि पंक्तियों को दर्द तथा दीनता के साथ गाकर श्रीमती हुबलीकर ने जनता के हृदय पर सदाके लिये अपनी स्मृति स्थायी रूप से जमा दी है–

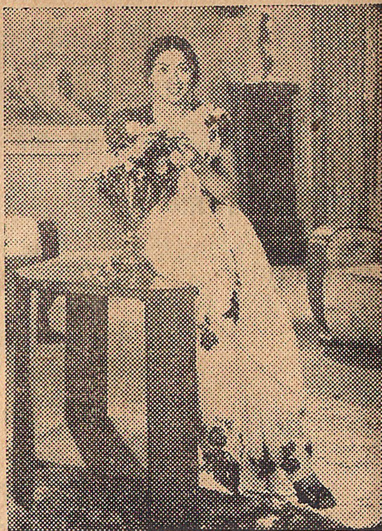
"हे भँवरे तू ना सता" दूसरा सफल श्रृंगार रस पूर्ण गीत है जिसमें **श्रीमती शान्ता हुबलीकर** ने अपनी संगीत प्रियता का मधुर परिचय दिया है–रस लोलुप भँरे के सन्मुख कितने स्वाभिमान भरे शब्दोंमें तथा उपयुक्त स्वरों में इस गीत को आपने गाया है–स्वरों में ही हार्दिक भावों को प्रगट करते हुये आपने एक विशेष आकर्पण उत्पन्न किया है–

एक तरफ:—

सरोजिनी :—

देखूँ कबतक बाट – पियरवा ?
पथराई अँखियाँ – देखत ढूँढत !
एकहु छिन मोहे – चैन न आवत !
हारी बाट निहार ! पियरवा ! ॥
जिया तड़पत है – हिया धड़कत है
दरसको तोरे – ललचत मन है
जीवन के आधार ! पियरवा ! ॥
सागर उछले – तुंग तरंगें
तैरत साजन – धारि उमगें
व्याकुल मैं इसपार – पियरवा ! ॥

हृदयसे निकले हुये विचारों का– गायन रूपमें शब्दोका संग्रह है– प्रेमिका की पुकार–प्रार्थना प्रेमी की इच्छा पर ही अपने के डाल देने का विचार–सब ही भावों के सफलता पूर्वक गाने का अभिमान **श्रमतीं शान्ता हुबलीकर** के यदि किसी अंश तक हो जाय तो अनुचित न कहा जायगा–आशा ही नहीं विश्वास है कि ये गाना युवक हृदयों के अति ही रुचिकर प्रतीत होगा–



"सूरज आय चढे आकाश" इस गीत म दृष्य वर्णन करने में लेखक ने जितना परिश्रम शब्दों के जुटाने में किया हैं उस से भी अधिक उत्साह तथा उल्लास के साथ **श्रीमती हुबलीकर** ने इस गीत को गाया है–एक तो कोकिल कंठ–मधुर स्वर–मधुर साजोंका सम्मेलन–इन सबने श्रीमती हुबलीकर तथा गीत की सुन्दर सफलता को पूर्णिमाकी चांदनीके समान प्रकाशित कर दिया है–आपके सभी गायनों में आवश्यक रूप से ट्रम्पेट सेक्सोफोन इत्यादि विदेशीं बाजों के सहकार से सफल उतारने का भार तथा श्रेय श्री भोलेजी को है–श्रीमती शान्ता हुबलीकर के सभी गायन लोकप्रिय होना निश्चय हैं ॥

एक तरफः—

सरोजिनी :—

कैसा जादू डाला तूने जाने जाँ
नालों से मेरे जो उठा है यह धुवाँ !
अपने दिलकी बातें मैंने तुम्हें हैं सुना दीं !
शबोरोज़ फुर्क़त में रहूँ मैं परेशाँ ! ॥
चाहे मुझे ठुकरा दो या हिया में बसालो !
हाल दर्दे दिलका मैं करूँ कैसे बयाँ ? ॥
राहे मोहोब्बतसे पीछे क़दम ना हटाऊँ
जोभी राज़े दिल हो प्यारे !
करदे वह अयाँ !

दुसरी तरफः—

सरोजिनी :—

सूरज आय चढ़े आकास
धवरे मन्दिर चमके कँगूरा
सोहत नवल प्रकास
मन्दिर में की मूरत मङ्गल !
निखरी अतुल उजास !
आँगनमें फूली फुलवारी
मन्द सुगन्ध पसार !
भरीं मोदसे पवनकी लहरें
चहूँदिस करत विहार !
अबतक बीती क्यों न हिया की

निपट अँधेरी रात ?
आतुर जियरा यह उजियारा
कब आयेगा हाथ ? ॥
सूरज आय चढ़े आकास !



Balakram **बालकराम**

श्याम और सुरेश :—

M.P. 569 / एम. पी. ५६९ — **मौज बड़ी हो** / **मायामें काहे को**

"मौज बड़ी हो लाकर जल्दी मुझे दिला दो" ये एक बालक समूह का गीत है-नायक हैं बाल नट **बालक राम** तथा **उल्हास**-जिन्होंने श्याम और सुरेश का अभिनय किया है-बालकों के लिये ये गीत बड़ा ही सुन्दर हैं-एक तो सुंदर शब्दों की लड़ियां-फिर साथ देने वाले सभी बाजों का मधुर स्वर-ट्रम्पेट की निराली फूंक-बचपन की उमंगों से भरे सुरीले कंठो का गायन-छोटों को ही नहीं-बड़ोंको भी आकर्षित कर लेते हैं-"दुनिया न माने" के बाल गायक को अभी आप भूले न होंगे-शीघ्र हो बालक-राम जैसे सफल तथा निर्भीक बाल-



नट को चित्र में लाकर प्रभात ने बालकों के मनोरंजन का पूरा ध्यान रखा है-गीत की मनोहरता वर्णन नहीं की जा सकती।

"माया में काहे को-भूला संसार" श्री **छोटू** से जनता **"वहां"** नामका चित्र में भलीभांति परिचित हो चुकी है-आपके स्वर में एक विचित्रता है- जो इस सामुदायिक भजन में सफल रूपसे अपना निराला पन प्रगट कर रही है-छोटू जी के साथ श्री **परशुराम** भी अपने कोमल कंठ से गीत को सफल बनाते हैं-गीत की सफलता देखकर ये कहने का साहस होता है कि या तो संपूण गीत अथवा पहले शब्द तो अवश्य ही सुनने वाले के मुख पर खेलते रहेंगे-गायन में संगीत रस के साथ ही त्याग की भी झलक है. सुनते समय तो अवश्य ही हृदय पर कुछ प्रभाव होता है॥

एक तरफः—

श्याम ओर सुरेश :—

श्याम :—मौज बड़ी हो लाकर जल्दी मुझे दिलादो॥
रिस्ट वॅाच इक नन्ही सुन्दर
टिक टिक करती रुके न दमभर।

सुरेश :—तोड़ फोड़ तू झट डालेगा?

श्याम :—उंहू! बाँधूं चुपके कसकर!
चमकीली भड़कीली मोटर
पम् पम् करके हाँकूं डटकर!

सुरेश :—बाबू, तू, मैं चलें घूमने!

श्याम :—भैय्या, तुम, मैं चलें, घूमने !
सुरेश :—बाबू, तू मैं चलें घूमने !
श्याम :—चिढ़ते हैं वह काहे तुमसे ?
हम कर देंगे कुट्टी उनसे !

दुसरी तरफः—

Parshuram & Mr. Chhotu परशुराम और छोटू

रामसरूप और उसके साथी :—

माया में काहे को – भूला संसार !
दुनियाके साथी – मतलबके यार ! ॥
माता और कान्ता – झूठा है नाता
झूठा है पीतम् – और झूठा है प्यार ॥
झूठा है व्यापार – और झूठा व्यवहार
दरदरपर फिरफिरकर–बनता है ख्वार ! ॥
अपनेको भूला – फिरता है फूला !
विषयोंसे लीपटा है – जीवन है भार ! ॥
अवसरको खोता – है खाता गोता !
धर धीर मनमाहे – हिम्मत न हार ! ॥
बाजत गाजत – कूचकी नौबत
भगवत्को प्यारे !– न दिलसेबिसार ! ॥



सुनो ! !   "सुप्रसिद्ध"   सुनो ! ! !

प्रभात फिल्म कंपनी पुणें

के

"गोपाल कृष्ण"

नामक पौराणिक संगीत चित्रपट के

हिंदी और मराठी

सुश्राव्य व संग्राह्य रेकॉर्डस

Shanta Apte. — शांता आपटे.

M P 555 एम पी ५५५	ग्रास ये प्रीतिका मोदमयी ये 'कपिला'
M P 556 एम पी ५५६	सर सर सरवत बचपन का याद आया

Ram Marate. — राम मराठे.

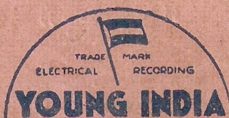
M P 557 एम पी ५५७	तू मेरी मैय्या निर्धना का तू है धन

Shanta Apte & M P 558 Ram Marathe एम पी ५५८	कान्हा सबको मोहे गुजरिया दे दधि दान	शांताआपटे और राम मराठे

Parshuram. — परशुराम.

M P 559 एम पी ५५९	तुम ब्रज के दुलारे रत्नो जै गऊवें
M P 565 एम पी ५६५	माता गऊ हमारी नाचत झुमत जायें

"यंग इंडिया"



धी नॅशनल ग्रामोफोन रेकॉर्ड मॅन्युफॅक्चरिंग कं० लिमिटेड.
११०, मेडोज स्ट्रीट, फोर्ट मुंबई, १.

फॅक्टरी :—शिवरी क्रॉस रोड,
वडाळा, मुंबई.

टेलिफोन नं :—२५१८१
टेलीग्राम :—Tansen

कोठारी प्रिन्टींग प्रेस, कोट मुंबई.

